POCKET BOOKLET · पॉकेट पुस्तिका

ॐ

श्री हनुमान चालीसा

Hanuman Chalisa

With Hindi and English meaning



thehindubook.com

हनुमान चालीसा

Hanuman Chalisa

DOHA 1

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।

गुरु के चरण-कमलों की धूल से अपने मन रूपी दर्पण को साफ करके मैं श्री राम के निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष — ये चारों फल देने वाला है।

Cleansing the mirror of my mind with the pollen-dust of my Guru's lotus feet, I sing the unblemished glory of Shri Ram — the giver of the four fruits of life: dharma, artha, kama, and moksha.

DOHA 2

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

अपने को बुद्धिहीन जानकर मैं पवनपुत्र हनुमान जी का स्मरण करता हूँ। हे प्रभु, मुझे बल, बुद्धि और विद्या दीजिए और मेरे सारे दुख और दोष दूर कीजिए।

Knowing myself to be ignorant, I remember the Son of the Wind. Grant me strength, intellect, and knowledge, and remove my sorrows and shortcomings.

CHAUPAI 1

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।

हे हनुमान जी, आपकी जय हो, आप ज्ञान और गुणों के सागर हैं। हे वानरों के स्वामी, आपकी जय हो, आप तीनों लोकों में प्रकाश फैलाने वाले हैं।

Victory to you, Hanuman — ocean of wisdom and virtue. Victory to the Lord of monkeys, illuminator of all three worlds.

CHAUPAI 2

राम दूत अतुलित बल धामा।

अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

आप श्री राम के दूत हैं और अतुलनीय बल के भंडार हैं। आप अंजनी पुत्र और पवनसुत के नाम से जाने जाते हैं।

Messenger of Ram, abode of matchless strength — known as Anjani's son and child of the Wind.

CHAUPAI 3

महाबीर बिक्रम बजरंगी।

कुमति निवार सुमति के संगी।।

आप महान वीर, पराक्रमी और वज्र के समान शरीर वाले हैं। आप बुरी बुद्धि को दूर करते हैं और अच्छी बुद्धि वालों के साथी हैं।

Great hero, mighty, with a body like a thunderbolt — remover of wicked thought and companion of good sense.

CHAUPAI 4

कंचन बरन बिराज सुबेसा।

कानन कुंडल कुंचित केसा।।

आपका रंग सोने जैसा है और आप सुंदर वस्त्रों में शोभा पाते हैं। आपके कानों में कुंडल हैं और बाल घुंघराले हैं।

Golden-complexioned, radiant in beautiful attire, with earrings in your ears and curly flowing hair.

CHAUPAI 5

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।

कांधे मूँज जनेऊ साजै।।

आपके हाथों में वज्र जैसी गदा और ध्वजा शोभित है। आपके कंधे पर मूँज का जनेऊ सजा हुआ है।

In your hands shine the thunderbolt mace and the banner. The sacred thread of munja grass adorns your shoulder.

CHAUPAI 6

शंकर सुवन केसरी नंदन।

तेज प्रताप महा जग बंदन।।

आप शिव जी के अंश और केसरी जी के प्रिय पुत्र हैं। आपके तेज और प्रताप की सारा संसार वंदना करता है।

You are Shiva's own form, delight of Kesari. Your valour and glory are revered across the world.

CHAUPAI 7

विद्यावान गुनी अति चातुर।

राम काज करिबे को आतुर।।

आप विद्वान, गुणवान और अत्यंत चतुर हैं। आप श्री राम के कार्य करने के लिए सदा उत्सुक रहते हैं।

Wise, virtuous, exceedingly clever — always eager to perform Ram's work.

CHAUPAI 8

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।

राम लखन सीता मन बसिया।।

आपको प्रभु श्री राम की कथा सुनने में बड़ा आनंद आता है। श्री राम, लक्ष्मण और सीता जी आपके हृदय में बसते हैं।

You delight in listening to the Lord's deeds. Ram, Lakshman, and Sita dwell in your heart.

CHAUPAI 9

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।

बिकट रूप धरि लंक जरावा।।

आपने छोटा रूप धारण करके सीता माता को दर्शन दिए और विशाल भयंकर रूप धारण करके लंका को जला दिया।

You appeared before Sita in a subtle form, and burned Lanka in a fearsome one.

CHAUPAI 10

भीम रूप धरि असुर संहारे।
रामचंद्र के काज संवारे।।

आपने भीषण रूप धारण करके राक्षसों का संहार किया और श्री रामचंद्र जी के सारे कार्य सफल किए।

Assuming a mighty form, you destroyed the demons and accomplished Lord Ram's mission.

CHAUPAI 11

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।

आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण जी के प्राण बचाए। इससे प्रसन्न होकर श्री रघुवीर ने आपको हृदय से लगा लिया।

You brought the life-giving Sanjivani herb and revived Lakshman. Shri Raghubir embraced you with joyful heart.

CHAUPAI 12

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

श्री राम ने आपकी बहुत प्रशंसा की और कहा कि तुम मुझे मेरे भाई भरत के समान प्रिय हो।

The Lord of the Raghus praised you lavishly: "You are as dear to me as my own brother Bharata."

CHAUPAI 13

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

हजार मुखों वाले शेषनाग भी तुम्हारा यश गाएँ — ऐसा कहकर लक्ष्मीपति श्री राम ने आपको गले से लगा लिया।

"May the thousand-mouthed serpent sing your glory," said Shri Pati, embracing you.

CHAUPAI 14

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।।

सनक आदि ऋषि, ब्रह्मा जी आदि देवता, बड़े-बड़े मुनि, नारद जी, माँ सरस्वती और शेषनाग भी —

Sanaka and the other sages, Brahma and the chief ascetics, Narada, Saraswati, and even Shesha —

CHAUPAI 15

जम कुबेर दिगपाल जहां ते।
कबि कोबिद कहि सकैं कहां ते।।

यमराज, कुबेर और सभी दिशाओं के रक्षक भी आपकी महिमा का पूरा वर्णन नहीं कर सकते, तो कवि और विद्वान भला कैसे कर पाएँगे।

Yama, Kubera, the guardians of the directions — not even poets and scholars can fully express your glory.

CHAUPAI 16

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

आपने सुग्रीव पर बड़ा उपकार किया। उन्हें श्री राम से मिलवाकर उनका राज्य वापस दिलवाया।

You did a great favour to Sugriva: by introducing him to Ram, you restored his kingdom.

CHAUPAI 17

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।

विभीषण ने आपकी सलाह मानी और वे लंका के राजा बन गए, यह सारा संसार जानता है।

Vibhishana accepted your counsel and became king of Lanka — as all the world knows.

CHAUPAI 18

जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

हजारों योजन दूर स्थित सूर्य को आपने मीठा फल समझकर निगल लिया था।

The sun, thousands of yojanas away, you swallowed thinking it to be a sweet fruit.

CHAUPAI 19

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।

प्रभु श्री राम की अंगूठी मुँह में रखकर आपने समुद्र पार कर लिया, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

Carrying the Lord's ring in your mouth, you leaped across the ocean — no wonder in that.

CHAUPAI 20

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

संसार के जितने भी कठिन काम हैं, वे सब आपकी कृपा से आसान हो जाते हैं।

Every difficult task in the world becomes easy by your grace.

CHAUPAI 21

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

आप श्री राम के द्वार के रखवाले हैं। आपकी आज्ञा के बिना वहाँ कोई प्रवेश नहीं कर सकता।

You guard the gates of Ram's abode. Without your permission, none may enter.

CHAUPAI 22

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रच्छक काहू को डर ना।।

आपकी शरण में आने वाले को सारे सुख मिल जाते हैं। जब आप रक्षक हों, तो किसी बात का डर नहीं रहता।

In your shelter, all joys are found. With you as protector, no fear remains.

CHAUPAI 23

आपन तेज सम्हारो आपै।

तीनों लोक हांक तें कांपै।।

अपने तेज को आप स्वयं ही संभाल सकते हैं। आपकी एक गर्जना से तीनों लोक काँप उठते हैं।

You alone can bear your own splendour — at your roar, all three worlds tremble.

CHAUPAI 24

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।

महाबीर जब नाम सुनावै।।

जब कोई महावीर हनुमान जी का नाम लेता है, तो भूत-पिशाच पास भी नहीं आते।

No ghost or evil spirit comes near when one chants the name of the Great Hero.

CHAUPAI 25

नासै रोग हरै सब पीरा।

जपत निरंतर हनुमत बीरा।।

वीर हनुमान जी का नाम निरंतर जपने से सारे रोग नष्ट हो जाते हैं और सब पीड़ा दूर हो जाती है।

Disease departs, all pain is removed — by constantly repeating the name of the brave Hanuman.

CHAUPAI 26

संकट तें हनुमान छुड़ावै।

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

जो मन, कर्म और वचन से हनुमान जी का ध्यान करता है, उसे वे हर संकट से छुड़ा लेते हैं।

Hanuman delivers from distress those who meditate on him with mind, deed, and word.

CHAUPAI 27

सब पर राम तपस्वी राजा।

तिन के काज सकल तुम साजा।।

तपस्वी राजा श्री राम सबसे श्रेष्ठ हैं, और उनके सारे कार्य आपने ही पूरे किए।

Ram is the ascetic king above all — and you accomplish every one of his tasks.

CHAUPAI 28

और मनोरथ जो कोई लावै।

सोइ अमित जीवन फल पावै।।

जो कोई भी अपनी कोई और इच्छा लेकर आपके पास आता है, उसे जीवन का असीम फल प्राप्त होता है।

Whoever brings any other wish to you receives boundless fruit of life.

CHAUPAI 29

चारों जुग परताप तुम्हारा।

है परसिद्ध जगत उजियारा।।

आपका प्रताप चारों युगों में फैला है। आपकी कीर्ति पूरे संसार में प्रकाश की तरह प्रसिद्ध है।

Your glory spans all four ages — famed throughout the world as its light.

CHAUPAI 30

साधु संत के तुम रखवारे।

असुर निकंदन राम दुलारे।।

आप साधु-संतों की रक्षा करते हैं और राक्षसों का नाश करते हैं। आप श्री राम के अत्यंत प्यारे हैं।

You protect saints and holy ones; you destroy demons — beloved of Ram.

CHAUPAI 31

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।

अस बर दीन्ह जानकी माता।।

आप आठों सिद्धियाँ और नौ निधियाँ देने वाले हैं। यह वरदान आपको माता जानकी ने दिया है।

Giver of eight supernatural powers and nine treasures — such a boon Mother Janaki herself granted you.

CHAUPAI 32

राम रसायन तुम्हरे पासा।

सदा रहो रघुपति के दासा।।

राम नाम रूपी अमृत आपके पास है। आप सदा श्री रघुपति के सेवक बने रहें।

The elixir of Ram's name is yours — may you forever remain the devoted servant of Raghupati.

CHAUPAI 33

तुम्हरे भजन राम को पावै।

जनम जनम के दुख बिसरावै।।

आपका भजन करने से श्री राम की प्राप्ति होती है और जन्म-जन्मांतर के दुख भूल जाते हैं।

Through singing your praise, one attains Ram — and forgets the sorrows of countless births.

CHAUPAI 34

अंत काल रघुबर पुर जाई।

जहां जन्म हरिभक्त कहाई।।

अंत समय में भक्त श्री राम के धाम को जाता है, और जहाँ भी जन्म लेता है, वहाँ हरि का भक्त कहलाता है।

At the end, one reaches Ram's eternal abode — and wherever one is reborn is called a devotee of Hari.

CHAUPAI 35

और देवता चित्त न धरई।

हनुमत सेइ सर्व सुख करई।।

मन में किसी और देवता को धारण करने की आवश्यकता नहीं, केवल हनुमान जी की सेवा से ही सारे सुख मिल जाते हैं।

One need not hold other deities in the heart — serving Hanuman alone brings every joy.

CHAUPAI 36

संकट कटै मिटै सब पीरा।

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

जो बलवान वीर हनुमान जी का स्मरण करता है, उसके सारे संकट कट जाते हैं और सब पीड़ा मिट जाती है।

Distress is cut away, all pain erased, for one who remembers mighty Hanuman.

CHAUPAI 37

जय जय जय हनुमान गोसाई।

कृपा करहु गुरुदेव की नाई।।

हे स्वामी हनुमान जी, आपकी जय हो, जय हो, जय हो! आप मेरे गुरुदेव की तरह मुझ पर कृपा कीजिए।

Victory, victory, victory to Hanuman, our Lord! Be gracious upon me as my own Guru is.

CHAUPAI 38

जो सत बार पाठ कर कोई।

छूटहि बंदि महा सुख होई।।

जो कोई इसका सौ बार पाठ करता है, वह सब बंधनों से छूट जाता है और उसे महान सुख मिलता है।

Whoever recites this a hundred times is freed from bondage and attains great bliss.

CHAUPAI 39

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।

होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

जो यह हनुमान चालीसा पढ़ता है, उसे सिद्धि प्राप्त होती है, इसके साक्षी स्वयं शिव जी हैं।

Whoever reads this Hanuman Chalisa attains perfection — Lord Shiva himself bears witness.

CHAUPAI 40

तुलसीदास सदा हरि चेरा।

कीजै नाथ हृदय मंह डेरा।।

हरि के सदा सेवक तुलसीदास जी प्रार्थना करते हैं कि हे नाथ, आप मेरे हृदय में निवास कीजिए।

Tulsidas, ever Hari's servant, prays: "O Lord, make my heart your dwelling place."

FINAL DOHA

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।

राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

हे पवनपुत्र, आप संकटों को हरने वाले और मंगल की मूर्ति हैं। हे देवताओं के राजा, आप श्री राम, लक्ष्मण और सीता जी सहित मेरे हृदय में बसिए।

O Son of the Wind, remover of distress, embodiment of auspiciousness — dwell in my heart along with Ram, Lakshman, and Sita, O Lord of the gods.

Read, listen and share

The full text with transliteration, meaning and notes is free at thehindubook.com — scan to open it on your phone.



thehindubook.com/chalisa/hanuman-chalisa



Daily Subhashit on WhatsApp

For shakha, family and personal use. Please print, copy and share freely — not for sale.

The Sanskrit texts are in the public domain. Meanings and notes © The Hindu Book, shared for free non-commercial use. Printed from thehindubook.com.